॥ श्रीगणेशाय नमः॥

॥अथ सामुद्रिक सटीक प्रारम्भः॥

इसग्रन्थके देखनेसे सम्पूर्ण जन्मकीऽयेवस्था मालूमहोगी, आयुज्ञान होगा, जितनेवर्षकी उमर होगीवह ज्ञान होगा।जिस वर्षमेंजो दुःखसुखहोने वालाहै सोज्ञान होगा, जितने पुत्रव कन्यायें होंगी व नपुंसक, बांझ व विधवा इन सब गुण अवगुणों का ज्ञान होगा। जितनी स्त्रियोंसे भोग है सो हाल मालूम होगा। राजा होने का चिह्न, प्रजा होनेका धनीहोने का, परिडत होनेका औरचोर होने का लक्षण, सुखी, पापी, पुरायात्माहोनेका सब हाल मालूम होनेंकेवास्ते नाना प्रकारकेसम्पूर्ण चिन्हों का हाललिखाहै सोसबमनुष्योंके जाननेंकेवास्ते बड़ा परिश्रमकरके संग्रह कियाहै। यहं ग्रन्थबडा दुर्लभहै सो सम्पूर्ण प्राणियोंके ज्ञान होनेके वास्ते

प्रगट हुआहै। इस ग्रन्थसे बड़ा ज्ञान होताहै। स्त्री केबायें हाथकोसम्पूर्ण रेखाके देखनेसे शुभअशुभ सुख, दुःख, आयु, जन्म मरणका हाल मालूम होताहै, सोसामुद्रिक शास्त्रमेंभगवानने ब्रह्माजीसे कहाहै प्रमाण हमने कहाहै सो तुम चित्त देकेसुनो महादेवउवाच ॥ श्रीशिवजीने कैलास पर्वत पर कल्पवृक्ष तलेबैठके श्रीपार्वतीजीसे सम्पूर्णजीवों का शुभाशुभ हाथ के चिन्ह पर रेखाविचार किया है। जिस तरह से होंगे तुम मन लगाकर सुनो।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि हस्तरेखा विचारणम् ।
दक्षिणे पुरुषं ज्ञेयं वामे वामकरे शुभम् ॥ १ ॥

हेमअबप्रथम हस्तरेखाका विचार कहतेहैं सो सुनो।दहिने हस्तकेमध्यमें पुरुषके लक्षणदेखना, वाम हस्तके मध्यमें स्त्रीके लक्षण विचार करना। हस्तकी रेखाके मध्येमें सम्पूर्ण जीवोंके जन्मके शुभाशुभेका फल लिखाहै। हेब्रह्मा!सोई फलहोगा अवश्य जानो। पार्वतीजी हमनेसत्य कहा है।जैसे श्रीमंत बडे राजा के पुत्र सो प्रजाके शुभकें सूचना

मन्न बखाननेसे उपकारहोगा सोवृतांन्त कहते हैं।
श्रीब्रह्माजी साधु होनेव मूर्खहोनेका चिन्ह श्रीहरि
भगवान्‌सेप्रश्न करतेहैं कि हे प्रभु!पुरुषका लक्षण
स्त्रीका लक्षण, यथावस्थित आप कृपा करके
हमसे कहो। इस चिन्हके जाननेसे शुभ अशुभका
परिज्ञानसम्पूर्ण प्रजामात्रको होगा।सो विचारपू-
र्वकवाक्यश्रवण करके श्रीभगवान उत्तरदेते हैंसो
वृत्तान्त यह हैकि कैलाशके ऊपर श्रीपार्वतीजीने
श्रीमहादेवजीसे एकसमय यहीप्रश्न करके पूछाहै
कि हे प्रभु!तुम्हारे मुखकमलसे नाना प्रकारकी
वार्ता श्रवण कीहै अब दया करकेस्त्री और पुरुष
केचिन्हहमसे कहोजिससे सम्पूर्णप्राणियोंके शुभा
शुभमात्रका परिज्ञान हो।श्रीमहादेवजी पार्वतीजी
सेकहते हैं कि हे प्रिये ! गिरिराजनन्दिनी ! तुमने
बड़ेउपकारके वृत्तान्त का प्रश्नकिया है सोप्रश्नका
उत्तरसुनो। प्रथम हाथके चिन्हके प्रकारहम तुमसे
कहते हैं। पुरुषके दाहिने हाथमें शुभ अशुभ देखने

वाली रेखाकापरीक्षा करनेसे सम्पूर्णजन्मकेशुभा
शुभका प्रजा लोगअपने ऐश्वर्य भोग करेंगे ऐसेही
परमेश्वरकीआज्ञासे जीवकेहस्तमेंब्रह्माजीने रेखा
केमध्य शुभाशुभ फलोंको लिखाहै सो तुम चित्त
देकरे सुनो ॥ १ ॥

शिवोक्तं तन्त्रसामुद्रं कररेख शुभाशुभम् ।
तस्य विज्ञानमात्रेण पुंरुपोनहि शोचितम् ॥ २ ॥

श्रीशिवजी कहतेहैंकि तन्त्र सामुद्रिक-शास्त्रमें
हस्तरेखासे शुभाशुभकी व्यवस्था लिखी है । इस
हस्तरेखा के देखनेसे सुख दुःखका ज्ञान होनेसे
पुरुष ज्ञानवान होकर इस लोकको त्यागके सुखी
होगा यंह निश्चय जानो ॥ २ ॥

यस्थ हस्थे समा रेखा कर्म सिद्धिश्च जायते ।
धनाढ्यस्तु स विज्ञयो यहु पुत्रो न संशयः ॥ ३ ॥

जिसके हस्त (पहुंचे) के वीच मध्यमें प्रथम
रेखासेमीन मछलीके समानप्रगटहो सोमीनरेखा
वालाप्राणी इससंसारमें जोजो व्यापार करेगासो
सबमेंप्राप्ति होगी। धनवान व बहुत पुत्रवान होगा
सुखीहोकरसंसारमेंबडे मान्यसहितजीवन पर्य्यंत

नाना प्रकारका सुखभोग करेगाइसमें सन्देहनहीं जानना। अवश्य मीन चिन्हवाले सुखी होते हैं। इसवृत्तान्त को निश्चय जानना चाहिये ॥ ३ ॥

तुला ग्रामं चक्रं कर मध्ये च दृश्यते ।
तस्य वाणिज्यसिद्धिः स्यात् पुरुषस्य न संशयः ॥ ४ ॥

जिसेप्राणीकेहस्तकी मध्यरेखाके बीचमेंतुला नाम तराजू तौलनेके पात्र ऐसा चिन्ह हो वा हस्त मध्येथग्राम वा नगरके सदृश चतुष्कोण रेखाकें मध्यविचित्र चिन्हप्रतीतेहो, यदि ग्रामकेसमानवा वज्रकाचिन्ह प्रतीतहो वातीनों एकहस्तके मध्यमें रहें अथवा कोई रेखामध्य रहे सेयह फल होगाकि वहेप्राणीतुला चिन्ह वालाग्राम चिन्हव वज्रचिन्ह वालेका एक मुख्य फल होगा। जो जो वाणिज्य कर्म संसार में प्रसिद्ध हैं सो सब वाणिज्ये करेगा। वह वाणिज्यद्वारा धनवानहोगा। सुखी औरभोगी होकर जन्म पर्यन्त आनन्दमें रहेगा ॥ ४ ॥

पद्म चांपादि खड्गश्च अष्टकोणादि दृश्यते ।
स्त्रियश्च पुरुषस्यापि धनवान्स सुखी नरः ॥ ५ ॥

जिसप्राणीकेहस्तेमध्य प्रगटचिन्ह कमलदल कैंप्रतीतहो,व चांप यानैं धनुषकाचिन्ह होवखड्ग तलवारव अष्टकोणका चिन्हस्त्रीवा पुरुषको होतो धनवान्औरसुखी होगा।पद्मकैचिन्हसे राजारानी हो। धनुषकें चिन्हसें घनुषधारीबड़ा बीर होतरवार काचिन्ह होनैसैंबड़ा सिपाहीऔर बलवन्तहो।अष्ट कोणका चिन्हहोनेमें भूपालव जमींदार भूमिपति, गामपति होगा और सब प्रकारकें सुख होंगे ॥५॥

शंख चक्रध्वजाकारौ नासाकारौ च दृश्यते।
सर्व विद्या प्रदानेन बुद्धिवान्स भवेन्नरः ॥ ६ ॥

जिसके हस्त मध्यमें चक्रका चिन्ह हो तो वह पण्डितशास्त्री होनैकाचिन्ह है।यदि मध्यमेंशंखका चिन्हे हो तो विद्यवान शास्त्रज्ञ हो। यदि ध्वजाक चिन्हहोतोदैवज्ञ वेदवेदान्तका ज्ञाताहो। येदिहस्त केमध्य नासाकाचिन्ह दिखेतो सामान्य संसारिक व्यापार-विद्यामें निपुणहो।यदि सम्पूर्णचिन्हहस्त मेंरहेंतो सम्पूर्णषट शास्त्रचार, वेद, अठारहपुराण कापण्डितड वक्ता धनी मानी और सुखी रहै ॥६॥

त्रिशूलं करमध्ये तु तेन राजा प्रवर्त्तते।
यज्ञे कर्मणि दाने च देव द्विजप्रपूजने ॥ ७ ॥

त्रिशूलका चिन्हप्रतीत होतोराजा होनेका लक्षण है अथवास्त्रीके हस्तेमध्यमें व पुरुषके प्रकटशुद्ध त्रिसूलहोनेसे अवश्यराजाहोताहै अथवात्रिशूलमें कुछ सन्देह हो शुद्ध प्रकटे न मालूम हो तो राजाके आश्रित होके राजा भोगेगा। राजा होके वराजाके दासवर्तीहोके नाना प्रकारका यज्ञकरेगा। धर्मात्मा और उपकारी होगा॥ गौ ब्राह्मण देवता गुरु माता पिता सबकी सेवा पूजा सम्मान करेंगा। धर्म-शील, सुखी, गुणी धनी गुणियोंमें माननीय होगा त्रिसूल हस्तवाले का बहुत प्रताप व सुयश लोक मै विख्यात होगा ॥ ७ ॥

शक्ति तोमर बाणश्च करमध्ये सुदृश्यते।
रथ चक्र ध्वजाकारो शक्राज्यं लभेन्नरः ॥ ८ ॥

यदि स्त्री पुरुषके हस्त मध्यमें शक्ति (बरछी) का चिन्ह होअथवा तोमर खंगके सदृश कुछ विलक्षण मुष्टिकमें हल प्रवेश का योग तोमर नाम कुछ खड्गाकार प्रतीतहो वा बाणकाचिन्हे हाथके मध्य

मेंमालूम हो तो इन तीनो चिन्होंके फलसे बडेश्रेष्ट राज्यको प्राप्त हो। यदि चिन्ह होतो सामान्य राज्य के भोग को प्राप्त होगा। दो चिन्ह से राज्येऐश्वर्य भोग करैगा। संसारमें बडे आनन्दसे जन्मपर्य्यंत सुखी अर्थात् धनी होकर सुख भोगेगा ॥ ८ ॥

अंकुशं कुंडलं चक्रं यस्य पाणितले भवेत् ।
तस्य राज्य महाश्रेष्टं सामुद्रवचनं यथा ॥ ९ ॥

जिसको कुंडलका चिन्हहो अथवा चक्रका चिंह हो वो अंकुशका चिन्ह किसी पुरुषके हस्तमध्यमें हो तो इनके प्रतापसे वह महाराजा वा चक्रवर्ती राजा होगा। यदि एक चिंह हो तो सामान्य राज्य भोगेगा, दोचिंह होतो कुछ विशेष राज्यका ऐश्वर्य भोगेगा। क्षीरसमुद्रवासी नारायणका वचन सत्य है इसमें संदेह नहीं है। तीनों चिंह होनेसे अवश्य महाराजा चक्रवर्ती भूपालनाम होके सम्पूर्ण भूमि का पालनकर्त्ताके नामसे विख्यात होगा ॥ ९ ॥

गिरि कंकण योनीर्न नरमुण्ड घटादिकं ।
करेचै यस्य चिन्हानि राजमंत्री भवेन्नरः ॥ १० ॥

जिसके हस्तमें गिरि नाम पर्वतके चिन्ह वा कंकणका चिन्ह हो वा योनिका चिन्ह हो वा मनुष्यके मुण्डका चिन्ह हो वा घट नाम कलशका चिन्हयदिहस्तमें प्रतीतहो तो राजाका मंत्री दीवान राजमान्य राजद्वारके प्रधान होनेके लक्षण हैं। इन तीनो चिन्हों के होनेसे राजमंत्री अवश्य होते हैं

सूर्य चन्द्र लता नेत्र अष्टकोण त्रिकोणकम्।
मन्दिरं गज अश्वानां चिन्हो धनसुखी भवेत ॥ ११ ॥

जिसके हस्तमेंसूर्यकाचिन्हहोचेन्द्रमा अथवा लतावेलकाचिन्हहो, नेत्रकाचिन्हअष्टकोणकाचिन्ह होयदिहस्त मध्यमेंत्रिकोणचिन्हहो, मंदिरकाचिन्ह हो, हाथीका चिन्ह होतो द्वार पर हाथी बंधे रहेंगे। यदि अश्व घोडेका चिन्हे हो तो घोडे द्वार पररहैंगे। ये संपूर्णचिन्हहस्तमें रहनेंसेमनुष्य बडा धनाढ्य व पृथ्वीपालक होके लोकमें सुखी रहेगा इसमें सन्देह नहीं है ॥ ११ ॥

अंगुष्ठो ह्ययमध्यस्तो यवो यस्यविराजते।
उत्पन्न भुवि भोगीस्यात् स नरःसुखमेधते ॥१२॥

जिस प्राणीकेहस्तमें अंगुष्टकेऊपरकीमध्य-रेखाकेबीचमेंयदियवकाचिन्हहोतो संसारमेंबुद्धि-मान, गुणी, ज्ञानी, विद्यवान्और धनी होकेसुखी होगा। जन्मसे मृत्यु तक सदा सुख भोगेगा॥ १२॥

मध्यमा तर्जनीमूले यको यस्य च दृश्यते।
धनवान्सुखभोगी स्यात् पुत्र दारा गृहादिषु॥ १३॥

जिस प्राणीके हस्तमें मध्यके उंगलीकें मूलके नीचेकी रेखाके बीचमेंयवका आकार दृश्यमानहो तो वह धनपति व सुखी हो। तर्जनी नाम अंगूठेके समीपकी उंगलीको तर्जनी कहते हैं। इस तर्जनी उंगलीके मूल तरेरखाके बीचमें यवका चिंह होतो वहधनी, गुणी, माननीय, सुखी औरलोकमेंप्रसिद्ध होकर प्रसन्नरहेगा। बड़भाग्यवान होगा। जन्मपर्यंत आनंदसे रहेगाइसमें संदेहनहींहै।सत्यवृतांत लोक में देखा जाता है। गुणी जनों से निश्चय मालूम होता है कि यह विद्यमान है॥ १३॥

अनामिका पूर्वमूले कनिष्ठा त्रिक्रमेनता।
आयुषं दश वर्षाणि सामुद्रवचनं यथा॥ १४॥

यदिकिसी प्राणीकेहस्तके बीचमें कनिष्ठअंगुली नामछोटी अंगुलीके प्रथम पूर्व भाग आरंभ होके अनामिका अंगुलीका पूर्वभागज दृतले आयुरेखा होने से देशवर्ष पर्यंत आयु जीवनका लक्षणआयु रेखामेंप्रतीतहो।यदि रेखाके बीचमेंकई रेखायें टूट गई हों अथवा नीचे की तरफ झुकी हों तो जलमें डूबनेका ज्ञान होता है। यदि आयु रेखाके ऊपरसे चढ़कनीचे झुकीहो तोवृक्ष वाकोठाके ऊपरसेगिरने की सूचना दिखाती है। यहक्षीरससमुद्रशायी भगवान मुखसे कहेहैं। यह वृतांत सत्य जानना। यदि कनिष्ठाउंगलीके मूलसेआरंभ तर्जनीपर्यंतएकरेखा परिपूर्ण अरुण वर्ण अर्थात लाल वर्ण रेखा शुद्ध मालूम हो तो एक शतेविंश १२० वर्ष की आयुरेखा सूचना करें॥ १४॥

अंगुष्ठस्याप्यूर्द्ध रेखा वर्तते नृध्वनेः शुभम्।
सेनापतिधनाढ्यस्य मध्यमायुर्नरो भवेत॥ १५॥

जिस नगरके अंगुष्ठ बडी उंगलीके ऊपर चढ़के यदि ऊर्ध्वगामी रेखा प्रतीत होतोजानिये किवह

बड़ा उत्तम राजराजेश्वरका चिंहहै।बड़ाछत्रपति राजा होगा, बडी सैना फौज लश्करका मालिक होगा . उस राजाके संगमें डंका, निशान, झंडा, पताका, अनेक बलकेंयोद्धा संगबास करैंगे।महा-राज बडे ऐश्वर्य, धन भोगकर पृथ्वीमें रहके ५०व ६०वर्षआयुजीवन रेखके मनुष्य सम्पूर्ण भोगकर के उत्तमे तीर्थमें शरीर त्याग करैगा ॥ १५ ॥

तर्जनी मूल पर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते।
राजदूतो भवेत्तस्य धर्मनाशोपजायते ॥ १६ ॥

तर्जनी नाम बड़ी उंगलीके समीपमें रहेगी तर्जनीनाम उंगलीकी जड मूलतलेयदिऊर्ध्व रेखा मिलके प्रगट होतो राजदूत होनेका चिंह है सिपाही होकेखड्गधारण पूर्वकनाना प्रकारराजकीयवार्ता हरणी ले आवनक अधिकारमें प्राप्त होकर जीवन पर्यंत राजकीयकर्म करनेमें चंचलहोके स्वस्थनहीं होनेसे अपने वर्णाश्रम के यावत् उचित धर्म कर्म की चेष्टासे रहित होके संसारमे यत्किंचित् विषय भोग करके शरीर त्याग करैगा ॥ १६ ॥

मध्यमा मूल पर्यन्तं ऊर्ध्व रेखा च दृश्यते ।
पुत्रपौत्रादिसम्पन्नो धनवान् च सुखी नरः ॥ १७ ॥

जिसके हस्त मध्यमें ऊर्ध्व रेखाके चिन्ह ढरके चलाऊपर मध्यमाउंगलीके मूलजड़ (तले) मिल प्रगटसी प्रतीत होतो वह प्राणी संसारमें अपनेवंश भरमें बडा भाग्यवान् होगा। बडी सुन्दर स्त्रीके संग रहेगा, बहुत सुख संपत्तिभोगेगा इस लोकमें बडा माननीय सुयश कीर्तिवंत भाग्यवंत नाम प्रगट करकेबडे आनंदसे भोगविलास करकेजीवनपर्यंत आनंदसें रहेगा ॥ १७ ॥

अनामिकायामूर्ध्वं रेखा व्यवसायो धनागमः ।
सुखदुःखेन जीवेत्स पुत्र पौत्रगृहादिषु ॥ १८ ॥

जिस प्राणीके हस्तमध्य पहुंचेके जड़ (तले) आरंभ होके ऊपर चलके यदि अनामिका उंगलीके मूलपर्यंत मिलकेप्रतीत ऊर्ध्वरेखा होनेसेव्यवसाय (रोजगार) नाना प्रकारके व्यवहारसे संयोग धन संचय करके शरीरमें किंचित सुख भोग करते हैं। अति धनाढ्य नहीं, अति दरिद्रीभी नहीं होगा पर न्तु मध्यम अधिकारी धनवंत होके सुख दुःखसे निर्वाह मात्र करके लोकमें वास करेगा ॥ १८ ॥

यस्य पाण्यूर्ध्व रेखा पदवी सुखमेवच ।
ते नरा परदेशेषु शतमायुर्लभंति ते ॥ १९ ॥

जिस प्राणीके हस्तमें यदि कनिष्ठिका उंगलीके मूल जडके (तले) ऊर्ध्वरेखाके चिंह मिलके प्रतीत हो तो कनिष्ठीका उंगलीके ऊर्ध्वरेखासे एकशत वर्षमनुष्यलोकमेंशरीर रहके परदेशमेंबास करके अपनी जीविका करते हुए वह शरीरका निर्वाह करेगा ॥१९॥

दीक्षा दान यथा धर्म पदवी सुखमेव च ।
त्रिद्या मानापमानं च अंगुल्या मूलसस्थिता ॥ २० ॥ ॥

कनिष्ठिका उंगलीके मूलमें यदिरेखा हो तो जितनीसंख्यागगनमें प्रतीतहोतोसबका फल यही है कि बडायज्ञका कर्ता होएक रेखासे दाता व परो पकारी हो, दो रेखा यथावत् धर्मशील, माननीय पूजनीय, ज्ञानवान, तृतीय रेखा के फलसे प्रतीत होता है बडेऐश्वर्य, राजभोग, बडी महिमा महत्त्व को प्राप्त होके सुख सम्पति हो, चतुर्थरेखा कनिष्ठा उंगली फलमें रेखा आती है बडा विद्यावान्, पंडित, ज्ञानी, बुद्धिमान्, वो पंचम रेखा मध्यमें

फल दर्शित हो तो लोक में मान्य होनेका चिन्ह है। बड़ा माननीय सखी सरदार चौधरी नामी हो। छठी रेखाके मध्यममें सुखफल प्रतीतहो यदिरेखा ७ हो तो संक्षेप से संसारमेंभोगकहेगा। बड़ासुखी धनीनहींहोगाऔरलोकमेअपमानभीबहुतपावेगा यहनारायणब्रह्मासेकहेकि उंगलीकानिष्टाके मूल से सम्पूर्णप्राणियोंके जन्मभरकेसुख, भोग, विभव ज्ञानीऔरअज्ञानियोंकालक्षणरेखासेप्रतीतहोताहै सोरेखामध्यब्रह्माजीनेप्राणियोंकेभोगको लिखा है

> कनिष्ठामूलसंयुक्ता त्रिरेखा यस्य दृश्यते।
> एक युग्मं तृतीयं चतुर्थं चाणसंयुतम् ॥ २ ॥

जिसप्राणीकेहस्त मध्येकनिष्ठा उंगलीकेमूल जड तलेयदि तीन रेखाके चिन्ह प्रतीत हों तो अर्थ धर्म काम यह तीन पदार्थको लोक मध्य भोगकरने का चिंह है। यदि एक रेखा हो तोधनी हो दो रेखा से धर्मात्माहो, तीनरेखासे बडाभोगकर्ता हो, चार रेखासे बहुत स्त्रियोंसे भोगकर्ता, हो पंचरेखा से

ज्ञानी माननीय यशस्वी बुद्धिमान होनेका चिंह है कनिष्ठा उंगलीके मूलतले जितनी रेखा हों उतनी स्त्रीसेभोग करनेमेंआवे ।यदि स्त्रीकेनाम कनिष्ठा मध्य मूलतले जितनी रेखा ऊपर चढ़कर प्रतीतहो तो उतनेही पुरुष का संग करनेका योग है॥ २१ ॥

आयुर्बल भवद्रेखा तर्जननी मूल संस्थिता ।
शतवर्षं भवेद्दायुः सुखमृत्युर्न संशयः ॥ २२ ॥

यहेसंसार सम्पूर्ण प्राणीमात्रके कनिष्ठाउंगली के मूल तले जो रेखा प्रतीत चिंह है उसी रेखाके चिंहे से मालूम होता है कि सुख, दुख, जन्म मरण आयु का ज्ञान प्रतीत होता है यदि कनिष्ठाके मूलसे चल से तर्जनी. उंगलीको बीच मूल जडसे मिलके प्रतीत हो तो एक सौ १०० शत वर्ष की आयुरेखा होती है। वह प्राणी सुखी होके प्राण त्याग करेगा यदि मध्यमाकी मूल तक रहे तो पचहत्तर ७५ वर्ष की आयुका चिंह प्रतीत होता है॥ २२ ॥

मध्यमामूलपर्य्यन्तमायुरेखा च दृश्यते ।
चतुर्दश चतुर्विंशदायुर्बल विनाशनम् ॥ २३ ॥

यदि कोई प्राणीके उंगलीके कनिष्ठाके मूल तले उठके मध्यमा मिलके मूलके नीचेसे प्रतीतहो तो मध्यमासे मिलकेनहीं मध्यमाके नीचे उंगली फरक होकमूल तले प्रतीत होनेसे प्राणीके आयुरेखामें प्रतीत होता है कि २४ वर्ष १४ मिलके अडतीस वर्षकी आयुरेखामें जन्मसे मरणतकका वल नाशप्रतीत होता है ॥ २३ ॥

आयुर्बल भवेद्रेखाऽनामिकामूलसंस्थिता।
त्रिदशं च त्रिषष्ठी च आयुर्विनाशनम् ॥ २४ ॥

जिस प्राणीके हस्तमें अनामिका उंगलीके मूल तले एक रेखा ऊपरसे नीचेको उतर रहीहोतोएक यवमात्रसे त्रिदशवर्षकी आयुरेखामें प्रतीतहो। यदि दो यवमात्र प्रतीत हो तो त्रिषष्ठ ६२ वर्षकी आयुरेखा के बलसे प्रतीत होती है, सो अनामिका के मूलकी रेखासे आयुके जन्मकाहाल प्रतीत होता है॥२४॥

आयुर्हानि यथा स्वल्पं लघुदीर्घं च दृश्यते।
ते नरा सुखदुःखेन चाल्पमृत्यु न संशयः ॥ २५ ॥

जिस प्राणीके हस्तमें स्वल्प रेखा छोटी प्रतीत

हो तो आयु अल्प थोडा जीवनका विचार करना। यदि विशेष वडी दीर्घ लम्बायमान रेखा होतो दीर्घ वडे आयुर्वलकोदेखो तो रेखामेंश्यामता कृष्णवर्ण रेखा प्रतीत होनेसेकिंचित् सुखकिंचित् दुःखकरते हुए अल्प आयुका विचार देखेया प्रकाररेखा होतो सम्पूर्णजन्ममात्रकेशुभाशुभकीसूचना करतीहै२५

करमध्ये स्थिता रेखा पितुर्वंशसमुद्भवः ।
पूर्णा रेखा पितुर्वंशोर्द्धं रखा परवंशकः ॥२६॥

हस्तकेमध्य दोरेखामेंविचारहै। अंगुष्ठउंगली और तर्जनीउंगलीकेवीचसेदो रेखा चलके पातीहै एकतो मध्यहस्तकेवीचसे पीछेपहुंचेकेतरफसेघूमे तो पाती है। एक रेखा कनिष्ठाअंगुलीके सामनेसे आयुरेखाकेनीचे जोचलकेहस्तमें रहेहैसो यदिपूर्ण रेखा होतो आयुरेखाकेनीचेरेखाजोअपने पिताके वीर्यसे जन्म लियाहैं। यदिपितृरेखामें अर्ध अल्प प्रतीत होतो जानियेकि परकेवीर्य्यसेजन्मलियाहै। यदिअंगुष्टतर्जनीदोनोकोवीचमेदोरेखामिलकेरहेंतो

जानियेकिमातापितासेवडाप्रेमथा।एकत्रसंगसदा
वपृथकरेखा प्रतीत हो तो जानियेकिदोके संग सदा
नहींरहताहै।दोमेंकलहहोवदंगोनिश्चयसेजानिये।
यदि पिता रेखा छोटी होके नीचेके तरफसे झुकके
चलीहोतोपिताकीअल्वायु जानना।यदिमोटीरेखा
लालचिन्ह ऊपरहस्तकेप्रतीतहोतोवडीआयु पिता
की जानिये।यदिमातृरेखाजोपहुंचेकें तरफसेछोके
ऊपरमेंगईहोअथवासूक्ष्मरेखामेंश्यामताहोतो मा-
ताकीआयुअल्पजानना।यदिमोटीहोके अरुणपूर्ण
वर्ण प्रतीत हो तो माताकीवडी आयुजानिये । यदि
माता पिताकेंदो रेखाकेबीचमेंऊपर भागमें त्रिशूल
होतोमातापितादोनोंस्वर्गवासीदेवताहोकेदेवलोक
मेंजाकरएकसंगस्वर्गवासकरेंगे।यहनिश्चयहै २६

मातृरेखा करे चैव एकैकं युग्ममेव च ।
एकैक युग्ममादाययुग्म रेखा च दृश्यते ॥ २७ ॥

पिताकी रेखा माता कीरेखादोहस्तकेंपृथक् २
होके हस्तके बीचमेंप्रतीतहोतोमाताकीरेखा तर्जनी

अंगुष्ठके बीचसे चलके पहुंचेमें मिलके रहती है। पिताकी रेखा तर्जनी और अंगुष्ठ के बीचमें निकसे आयुरेखाके बीचसे चलके हस्त वाम पार्श्वमें उठके जानना प्रतीत होता है, सोमाता पिताके पुण्यलेके माता पिताके अंशरज मात्र पिताकेअंश वीर्यमात्र दो रज वीर्यमें लेके प्राणीमात्रसंसारिकविषय भोग निमित्त शरीरको धारणकरतेहैं सोईमाता पिताकी रेखा दो हस्तके बीचमें प्रतीतहोती है॥ २७॥

बहुरेखा भवेत् क्लेशं स्वल्प निर्धन हीनता।
रेखायां वामनं सौख्यं सामुद्रिकवचनं यथा॥ २८॥

जिसके हस्तमेंमातापिताकीरेखाकेबीचमेंबहुत सी छोटी २ रेखायेंप्रतीत होंतो निर्धनहोनेका चिन्ह है शरीरमें नाना व्याधिकेहोनेका चिन्हप्रतीत होता है। यदि माताकेसूचनदो रेखाकेबीच में अति अल्प शून्य रेखा हो तोदरिद्रीहोनेका चिन्ह प्रतीततहोता है, इस वास्ते हस्तके बीच में पुष्ट पुष्ट रेखा यदि माताकी रेखाकेबीचमेंप्रतीतहोंवत्रिकोण, अष्टकोण

चक्र, त्रिशूलादिकोंके चिन्ह हों तो बडा माननीयं बुद्धिमान और सुखी होनेका चिन्ह होता है। यह क्षीरसागरसमुद्रवासीभगवाननेंश्रीब्रह्माजीसेंकहा है सो सत्ये जानना ॥ २८ ॥

अंगुष्ठानां प्रथक् रेखा गणयन्ते तूनयं पृथक् ।
रेखा द्वादशकं सौख्यं धनधान्यप्रदायकम् ॥ ३९ ॥

जिस प्राणीकेदहिने हस्तकी पांचोउंगलियोंके मध्ये की तीन ३ रेखाओंको पृथक्पृथक गिननेसे यदि बारह रेखायें हो तो बड़ा सुखी, धनी, गुणी और लायक होने का चिन्है प्रतीत होताहै ॥२९॥

अंगुलीनां पृथक् रेखा गणने चेत् त्रयोदशम् ।
महादुःखं महाक्लेशं सामुद्रवचनं यथा ॥ ३० ॥

जिसकेदहिने हस्तके पांचों उंगलियोंकी रेखा सेंसम्पूर्ण रेखा गणनाके कारण तेरहे रेखा प्रतीत होंवह बड़ा दुःखी, रोगी, पापी नाना क्लेश और धनहीनताके सूचनको दिखाता है। रेखासे प्रतीत करना समुद्रशायी ने कहा है ॥ ३० ॥

रेखा पंचदशे चौरः षोडषे धूर्तवंचकः ।

पापी सप्तदशे ज्ञा यो धर्मात्माष्टदशे भवेत् ॥ ३१ ॥

जिसकेदाहिनेहस्तकी उंगलीकीरेखा गननेमें १५हों तो बडा चोर होने का चिन्ह है। यदि सोरह रेखा गननेसे प्रतीत हों तो बड़ा द्यूत कर्मी जुआरियोंमेंबडा निपुण होनेका लक्षण है। वंचक और ठगकर्ममें बडाविचक्षण होगा।यदि सत्रह रेखाहों तो बडा पापी पाप कर्ममें रहे। बहुत प्रसन्न होके पापियोंके संगमेंरहकर जन्मपर्यंतनाना प्रकारके अयशअपराध पानेकाचिन्हहै।यदि दहिनेहस्तकी उंगलीमें१८रेखा प्रतीत होवे तो नाना प्रकारके धर्ममें प्रवृत्तहो करके भाग्यवान, धर्मशील, माननीयऔर लोकमें विदितहोके प्रसिद्ध होगा॥३१॥

ऊनविंशभवेत्पाणौ गुणज्ञो लोकपालकः।
तपस्वी विंशते ज्ञेया महात्मामेकविंशकः ॥ ३२ ॥

दहिने हस्तकीरेखा उंगलियोंके ऊनविंश होने सेमाननीय होगा। गुणवान लोकमें बडा सन्मान आदर होगा।यदि उंगलियोंकी रेखागिननेसे बीस

हों तो बड़ा तपस्वी योग कर्ममें निपुण धर्मात्मा होगा। यदि एकविशरेखा होतोबड़ा ज्ञानीमहात्मा श्रेष्ठलायक माननीय लोकमेंबड़ा तेजस्वीप्रतीत होकेप्रख्यात सुखभोग करतेहुए आनन्दसेशरीर कोलोकमेंरहैकेविदितप्रतापहोनेकाचिन्हहै॥ २२॥

दो०—लक्ष्य रेखा कर्मकी, अंगलि माहि विचारि।
चार चार गुनि लीजिये, जाना सुख की सार॥ १॥
आठ चौक बतीस हैं, लक्षण जानो सोय।
सुख दुख ये सब पाइके, भोग करैं सब कोय॥ २॥
जाके हाथ इकतीस हैं, नहीं होय बतीस।
सो प्राणी दुखही रहै, कर्म न जानैं ईस॥ ३॥
जाके हाथ तँतिस हैं, गिनती होय छतीस।
तन धन लक्ष्मी सम्पदा, क्रमने जानो ईस॥ ४॥

॥ चौपाई ॥

एकचक्रना चाल बखानै। दुइचक्र गुणवंतबहुजानै॥
तीनचक्रवाणिज धनहोवै। चारचक्रसों दरिद्रतरहोवे॥
पांचचक्र सर्वांगविलासा। छठों चक्र रसकामहुलासा॥
सात चक्र बहुते सुख जाना। आठचक्र रोगीतनकाजा॥
नव चक्रन से राजहिं करे। दशचक्र ते सिद्धपगधरे॥

अथ शंख विचार।

एकशंखनर सुखीकराई।द्वितीय शंखदरिद्रकोभाई॥
तृतीय शंखनिर्गुणी बखानै।चार शंखतेगुणवहुजाने॥
पांचशंखते निर्धनहोई। छठाँ शंख जानैसबकोई॥

अथ सीप विचार।

एकसीप गुणवंत जनहोवै।दोय सीप वक्ताजगसोहै॥
तृतीय सीप धन संग्रह जरै।चारसीप गुणयशबहुधरै॥

दोहा—चार सीपते अधिक जा, दश प्रयन्त यदि होय।
ऋद्धि सिद्धि ते सुख करै, महा पुरुष जग सोय॥

पहुंचे रेखा इक यदि होवे।राज्यभोग सुख मेंजगसोवे॥
रेखा पहुंचेदुइयदि जानो।वक्ता गुणि धनवंतबखानो॥
तीन रेखपहुंचे कीनाई। बड़े कष्ट दुःखीजग जाई॥

दोहा—करतल रेखा जाहि धस, परेउ मुष्टिके मांहि।
बड़ भोगी बांहं जानिये, यह लक्षण है जाहि॥ १॥
ऋद्धि सिद्धि दाता सुखी, वह जानै सब कोय।
मुष्टि बीच रेखा समे, रहे सो राजा होय॥ २॥
जाके वामे तिल बसे; महा दुखी सो खान।
निशि दिन चिन्ता में रहे, कहैं समुद्र बखान॥ ३॥

अथ नखके विचार।

दोहा—अरुणो नख जो पुरुष को, भोगी सुख को खान।
पुत्रवान धनवान गृह थोर होय सनमान॥ १॥

नख कारे जेहि पुरुष के, वाके होय कुशील।

महा दुखी सो जानिये, सबसे रहे दलील ॥२॥
श्वेते नख जो पुरुषके, बड़ो दुखी हो सोइ ।
ज्वर पीड़ा व्यापै सदा, सुखी न होवे कोइ॥३॥
पीत वर्ण नख पुरुषके, सो परदेश कराय ।
ना घर बाहरसे रहै, चिन्ताके बश होय ॥४॥
लाल नयन नख पुरुपके, तेजवन्त जो होय ।
महासुखी सब जानिये, शुभ लक्षण सब कोय॥५॥
नख हरित जो पुरुपके, सो पापी जिय जानि ।
महा दुखी वहि जानिये, कहैं समुद्र बखानि॥६।

अथ हस्त के विचार

दोहा० जानरको कर देखिये, फणाकार सो होय ।
धन संग्रह भोगी सुखी, वह जानो सब कोय॥१॥
जा नरको कर देखिये, पत्राकार सो होय ।
राज भोग सो नर करै, यह जानै सब कोय ॥२॥
जा नर के कर देखिये, मंडलाकार सो होय ।
नित्य गुलामी सो करै, वह जानो सब कोये॥३॥
दोहा-लम्बी भुजा बिचित्र नर, छोटी भुजाकोदास

होय सुशील सुहावना, सुनिये नाहिं प्रकास ॥१॥
लम्बी भुजा जो दाहिनी, वडो शूर सो जान।
बायें भुजा लम्बी रहे महा कपट पहिचान॥२॥

इति श्री शिव गौरीसंवादे तत्र सामुद्रिक हस्तरेखा
शुभाशुभ फलं सम्पूर्णम्।
॥ अथ लिंगलक्षण निरूप्यते ॥

महा ऋद्धि पुरा ख्यातं स्वल्पलिंगो धनी नरः।
अपत्यरहितो लोके स्थूललिंगो धनोज्झितः ॥३॥

इसलोकमें लिंगचारप्रकारकेहोते हैं। सातेअंगुल का, आठे अंगुलका, नव अंगुलका, और दश अंगुलका। यही लिंगके विचार करे है। यदि ७ अंगुल का लिंग हो तो धनी, सुखी मानी व पुत्रवंत हो। शंखसूक्ष्म पताल होनेसे लिंगका फल उत्तम है, अथवा ७ अंगुलका लिंग हो परन्तु चैतन्य होनेपर मोटा प्रतीत हो तो निर्धन, दरिद्री, दुःखी व पुत्र रहित होकेयत किंचित् सुखदुःख सेलोकमें निर्वाह करते हुए शरीर मात्रीकी रक्षा करैगा। विशेपकुछ

नहीं प्रतापवं होगा इससे शेष लिंगका महादरिद्री होगा॥२३॥

मेंडे वा मनकें चैव सुतान्नरहिता भवेत्।

वेंक्तन्यथापुत्रवान्स्यात् दारिद्रं विंतंतेत्वधः२४

दोनों अराडकोशाके ऊपर लिंग बायें तरफ अराड के ऊपरको झुकके खडा होके प्रतीत होने से पुत्रहीन, धनहीन और दुखी होनेका लक्षण लिंगसेप्रतीत होता है यदि दाहिने तरफके अराकोश पर झुकके लिंग का चैतन्य होना प्रतीती हो तो पुत्रवान, धनवानसुखीऔरलोकमें प्रतापीविदितहै। यदिदो अंडकेबीचसेखडाहोकेंनीचेकीतरफसेझुकके टेढा प्रतीत होतोनिर्धनहोनेका चिन्हहै, पुत्रवानहोगापरन्तु अन्नका दुख रहेगा उसे दरिद्री जानो। यदि दो अंड़के बीचसे सामने सीधालम्बा होके खडालिंग होतोलिंगसेंसुखीहोनेका चिन्हप्रतीतहोताहै॥२४॥

अल्पे तु तनयां लिंगे शिरालेथ सुखी नरः।

स्थूल ग्रन्थियुते लिंगे भवेत् पुत्रादि संयुतः॥२६॥

यदि छोटा लिंग होपरन्तुलिंगकेऊपरमेंगिरह ग्रंथिसे मिला हो गिरह टूटी न हो और लिंगखडे होनेसे शिरा नाडीउठी हुई प्रतीत होनेसेचाहेमोटा लिंग भी हो परन्तु लिंगके ऊपर चारो तरफ से गिरहग्रन्थिसंयुक्त रहनेसेसुखी, धनी पुत्रादिकोंसे सम्पन्ना होके लोकमें सुखीहोनेका चिन्हे लिंगसे प्रतीत होता है ॥ ३५॥

इति गरुणपुराणे ६० अध्याय समाप्त।

येन्यच्च। दीर्घलिङ्गेन दारिद्रं स्थूलिंगेन निर्धनः। कृशलिंगे सौभाग्यं ह्रस्वलिंगेन भूपतिः ॥ ३६

यदि दश अंगुलका लिंग हो तो निर्धन होस्थूल बडा मोटा लिंगहोनेसेनिर्धनदरिद्रिहोनेकाचिन्हहै पतला कृश लिंग होनेसें सौभाग्यवान और सुखी होगायदिअल्पछोटेलिंगकेऊपरग्रन्थि अरुणालाल वर्णप्रतीत हो तो सूक्ष्म पताल लिंग होनेसेराजाहो नेका लक्षण है। यही चिन्ह मिलेतो राजा अवश्य होता है ॥ ३६॥

कर्कशैःकठिनैर्लिंगैः परदारतः सदा।
रमणो च सदा दासी निर्धनो भवेति ध्रुवम्॥३७

जिसका लिंग बड़ा कठोर प्रतीत हो तो वह परस्त्रीके संगमें सदारमण करेगा। सदा दासी वेश्याके संगमें रमण भोग करते हुए निर्धन होनेका चिन्ह लिंग में प्रतीत है॥ ३७॥

कृष्णलिंगेन सूक्ष्मेण रक्तलिंगेन भूपतिः।
परस्त्रीरमणो नित्यं नारीणां वल्लभो भवेत॥३८॥

जिस प्राणीका लिंग कृष्ण, हो छोटा लिंगहो परन्तु सूक्ष्म पतला देखनेसे प्रतीत हो औरक्त वर्ण लिंगके ऊपरमें प्रतीत होनेसे भूपति राजा होगा परन्तु परस्त्री वेश्या कुलटा स्वैरिणी व्य-भिचारिणी अनेक सुन्दरी परस्त्रियों के संग भोग करते हुए बड़ा स्त्रीजनोंको भोग देनेसे प्रिय वल्लभपरस्त्रियों का सुखदाता होगा॥ ३८॥

कृशलिंगेन रक्तेन लभते चोतमांगणः।
राज्यंसुखंच दिव्यंचकन्यकायाः पतिर्भवेत्॥३९॥

जिस प्राणीका लिंग कृशहो अर्थात् बडा पतला देखनेसे प्रतीत हो और लिंगके ऊपर लाल वर्ण होनेसे उसमें सुन्दरी सर्पं गुणसे सम्पन्न दिव्यांगना दिव्य सुन्दरी कन्याका पति होके नाना प्रकारके राज्य विभवके सुखको भोगकरकेजीवन पर्यन्त लोकमें सुख भोगेगा ॥ ६ ॥

इति श्री शिवपार्वती संवादे तन्त्रसामुद्रे लिंगलक्षण शुभाशुभ सम्पूर्णम्

अथ ललाटवर्णन निर्णयम्।

उत्पन्नैपुल: शंखैर्ललाटे विषमस्तथा।
निर्धनो धन्यवन्तश्च अर्द्धदुसदृशैर्नरः॥ ४० ॥

जिस प्राणीका ऊंचा ललाटहो ललाटकेऊपर मेंयदि ऊंचा उन्नत ऊपरमें चढके प्रथम प्रगटशंख का चिन्है प्रतीत होवे ललाटके बीचमें वहां ही नीचा प्रतीत हो अथवा ललाटके ऊपरके रेखा अर्द्ध चन्द्रके सदृश प्रतीत होनेसे निर्धनके वंश में जन्म परन्तु बडा धनी व सुखी होगा वह प्राणी संसारमें बडा माननीय होगा इसमें सन्देह नहीं॥ ४० ॥

आचार्याः शुक्तिविशालः शरालैः पापकारिणः
उन्नताभिःशिराभिस्तु स्वस्तिकाभिर्धश्वरः॥४१॥

जिसप्राणीके ललाटके ऊपर शुक्तिकानामसी पीके सदृशरेखाकेसमाननाडीशिराप्रतीतहोतोआचार्य साधु अतिथि और वैरागी वेष बना के लोक में वंचक भक्त होके रहेगा, परन्तु पापकर्मकरनेमें प्रतीत होगा, और ललाट पर ऊंचो ऊंची प्रकटरेखा हो, स्वस्तिक कमल दलके सदृश नाडी चिन्ह न प्रतीत हो तो बड़ा धनियोंमें श्रेष्ठधनेश्वर होकेलोक में विख्यात हो ॥४१॥

निम्नैर्ललाटैर्वधार्हः क्रूरकर्मरतस्तथा॥
संवृत्तैश्च ललाटैस्तु कृपणा उन्यतैर्नृपः॥ ४२ ॥

जिसप्राणीकेललाटमेंचिन्हेनीचा बीचमें प्रतीत हो तो वह प्राणी बधिक रेखाके योग्य है। यदिनीचा ललाट वाला प्राणी जीवे तो जीवन पर्यंत दुष्टकर्म क्रूर स्वभाव पाप बुद्धि होके लोकमें विदित होगा यदिऊंचाललाटहोतोराजा होनेका चिन्ह निश्चय

जानना ॥ ४२ ॥

ललाटोपसृतास्तिस्रो रेखास्तु शतवर्षिणाम् ।
वृषत्वस्याच्च शभिरायुपंचवत्यथः ॥ ४३ ॥

प्राणीके ललाटकोऊपरमें तीनरेखा उत्तमप्रगट प्रतीत होनेसेएकसौसातवर्षकीआयुहै।यदिललाटे के ऊपर प्रगट चार रेखा हों तो ९५ पचानवेवर्षकी आयु जीवनरेखा से प्रतीत होती है ॥४३॥

अरेखयायुर्नवति विच्छिन्नाभिश्च पुंश्चला ।
कशतोवगताभिश्च अशीत्यायुर्नरो भवेत् ॥ ४४ ॥

जिस प्राणीके ललाटकेऊपरएक रेखाभी नहो तो उसकी९०वर्षकी आयु जानिये। यदि ललाट केऊपरबेहुतरेखाछीन्न२प्रतीतहोंसोप्राणी पुंश्चल लम्प,परस्त्री,परधन चुरानेका भोग करनेकासदा मनमें चिन्ता होनेका लक्षण है। यदि कोईएकरेखा ललाटको ऊपर बालकोंके मूलमें प्रगट हों तो८० वर्षकीआयुजीवनलाभ करको संसारमेंसुख पूर्वक

शरीर त्यागेगा ॥४४॥

पंचभिः पंचभिः षड्भिः पंचाशद्बहुभिस्तथा ।
चत्वारिंशत्त्रयक्राभिस्त्रिंशद्भ्रू लग्नगमिभिः ॥४५॥

जिसके ललाट पर पांच दश.रेखा छिन्न भिन्न प्रतीत हों वा ११ रेखाहोंवाछः रेखा होंयदि वहुत्त रेखा हों और गिननेमें ठीक न मालूमहोंतो इतनी रेखासे चालीस वर्षकी आयुहोती है। ललाटकेऊपर टेढीटेढीहोकर एक रेखा भृकुटीके ऊपर प्रतीत होतोतीस तीस वर्षकी आयु निश्चय होती है ॥४५

॥ विरंचयक्तम् ॥

विंशतिर्वामवक्राभिरायुःक्षुद्राभिरक्षकम् ।
वामार्द्धमधुवालेन्दुभे भ्रुवीवाललटके ॥

जिस प्राणीके ललाट की रेखावाम भागमेंविशेष हो वा टेढी छोटी २हो तो बीस वर्षकी आयु प्रतीत होती है यदि भृकुटी के ऊपर रेखा माथे पर होके चन्द्रमा के सदृश रेखा प्रतीत हो तो परिपूर्णआयु १२०वर्ष कीप्रतीत होती हैयदिभृकुटीके ऊपररेखा नहो द्वितीयाके चन्द्रमाके सदृश होऔर मोटीरेखा

भी न हो अथवा सूक्ष्म हो तो अति अल्पआयुप्रतीत होती है ॥४६ ॥

शुभमद्धे न्दु संस्थानमङ्गंस्याद्लामशम्।
नृपतीनां भवेच्चिह्नं ललाटे शुभदशनम् ॥४७॥

जिस प्राणीके ललाटमध्य भृकुटीकेमध्य रोम मिला हुआ न हो तोवहराजाहो, बडा ऐश्वर्यभोग करनेका चिन्ह प्रतीत होता है ॥४७॥

इति गरुडोक्ते शुभाशुभ फलललाटवर्णणं सम्पूर्ण।

अथ योनिलक्ष वर्णनम्।

शुभः कमठपृष्ठाभोगजस्कंधो वरो भगाः।
वामोन्नतं च कन्यादः पुत्रदो दक्षिणोन्नतः ॥४८॥

जिस स्त्रीकी योनि अर्थात् भग कमठ कछुआके समान पृष्ठ भाग ऊंचा हो तो उत्तम श्रेष्ठ भगके लक्षण हैं।यदि गज हस्ती के कंधेके समान उच्च योनी होतो श्रेष्ट है।यदि योनिके ऊपर वाम भागमें ऊंचा प्रतीत हो इस योनिसे कन्याकी विशेष उत्पत्तिहोनेकाचिन्ह है।यदि योनिकेऊपरदहिनी तरफ ऊंचाहोतो विशेषपुत्र होनेका लक्षणहै ॥४८॥

आखुरोमा गूढमणिः सुश्लिष्टः सहजः पशुः।
मृग कमलवर्णाभः शुभोश्वत्थदलाकृतिः ॥४९॥

जिस स्त्रीकी योनिकेऊपर बिलारीबिल्लीकेरोम सदृश अल्प भिन्न २ छोटे २ भूरे बाल हों तोवह योनिश्रेष्ठ है यदियोनिगूढगुप्तमिलके उसकेदोनों तरफकासंपुट संपुटमिलाहुआ मोटादेलहोकेऊचा प्रतीतहोयाकमलपुष्पके समान संपुटशुभऔरसुन्दरदेखनेमेंप्रतीतहोतोयोनिका चिन्हश्रेष्ठ है। यदि अश्वत्थपत्रपीपलके पत्तेकेसमानत्रिकोण ऊंची होके प्रतीतहोतोउत्तमगुणऔरशुभदायकलक्षण है

कुरंगखुररूपाभश्चुल्हिकोदरसन्निभः।
रोमसो विवृतास्यश्च दृश्यनाशोनिदुर्भगः ॥५०॥

जिसनारी की योनिकुरंग मृगकें खुरके सदृश हो, यदि चूल्हेकेपेटकें सदृशहो, याबहुतसे घने बाल ऊंची ऊंची हो अथवा योनिका मुखपृथक२होकेदाडिमके फलके सदृश फट रहा होऔरदेखनेमेंभीतर कामासकाला श्यामवर्ण होतो बडा दुर्भाग्य दुःख अशुभ क्लेशका दायक योनिका लक्षण प्रतीत

होता है ॥५०॥

शंखावर्त्तो भगो यस्यः सा गर्भमिहनेच्छति ॥
चिपिटः खर्परोजातः किंकरीयवदो भगाः ॥५१॥

जिस नारी की योनि शंखकेसमानएकतरफ से मोटी और एक तरफसे पतलीप्रतीत होतोगर्भकोन धारणाकरनेका लक्षण है।योनिमें यह चिन्ह वंध्या होनेकाप्रतीत होता है यदि चिपटी बहुत खालीऊंचीप्रतीतहो, देखनेमें खपराकेसमान योनि प्रतीत होतोकिंकरो,दासीभिक्षुकी,दरिद्री और दुःखीहोनेकाचिन्हैअशुभ और अमंगल है ॥५१॥

शंख नाभ्याकृतिर्योनिः स्त्रीयावत्तीवकीर्तिता।
तस्यास्तृतीयता वर्तें गर्भशय्या प्रकीर्तिता ॥५२॥

जिस स्त्रीकी शंख नाभिके समान योनि हो तो वह स्त्री बहुत संतान कन्या वपुत्रकी उत्पत्तिकरने वाली होती है उसकी योनिमें मानो गर्भ होनेकी शय्या रहनेका स्थान ही है ॥५२॥

इति योनिलक्षणं।

अथ नासिका कंठ लक्षणम् ।

वंश वेत्र सपात्राभो गत्र रोभाच्च नासिका ।
विफटः कुटिलाकारो लम्बागलंलस्तथाऽशुभम् ॥ ५३ ॥

जिस प्राणीका वंश पात्रके समान अथवावेत्र पत्रके समान उच्च नासिकाके होव स्त्रीकेरोमकश छासरोम नासिकाकेऊपरहो वेबडीभयंकरकुटिल लंबायमान ऊंचा गला कंठ होतो येहै चिन्ह स्त्रीके शरीरमेंअशुभ अमंगलका रूप होता है ॥ ५३ ॥

इति नासिका कंठ लक्षण संपूर्णम् ।

॥ अथ कांखलक्षणम् ॥

कक्षाश्वत्थदलो श्रेष्ठा सुगन्धप्यूर्ध्व रोमका ।
अन्यथार्थहिमानामा सौति अश्वत्थशारिके ॥ ५४ ॥

जिस स्त्री या पुरुषके कच्छा नामक कांखमें अश्वत्थ (पीपल)पत्रकेसदृशहोनेसेश्रेष्ठफलहै । यदि कांखमें सुगधितबासहोऔरऊर्ध्वऊंचेकोचढे हुए रोम प्रतीतहों तोबडेश्रेष्ठसुखदायेकलक्षणहैं अथवा पीपल पत्रकेसमान कांख न होवाकांखमें सुगंधि न हो और ऊर्ध्व भी न हो तो उस कांख

में दरिद्रताको दिखानेवाला लक्षण है। फलउत्तम नहीं है, साधारण फल जानना चाहिये ॥ ५४ ॥

॥ अथ पुंनभुजोलक्षणं निरूप्यते ॥

निर्मासा चैव भग्नालौ श्लिष्टौ च विपुलौ भुजौ ।
आजानुलंबिता बाहू वृतौ पानी नृपेश्वरे ॥५५॥

जिस प्राणीके भुजाके ऊपर थोडामतस्सप्रतीतहो और बराबरबडीश्रेष्ठऔरमोटीभुजाहोतोवहसुख दायकहै।यदिजानुघुटनेपर्य्यंतलबायमानदीर्घबाहु पुरुष की होतो वहबडाउत्तमऔरश्रेष्टराजा होके नाना प्रकारकासुख भोग करनेवाला लोकमें प्रगट होगा इसमें सन्देह नहीं है ॥५५॥

निश्वाना रामशोहृस्वौ भुजा दारिद्र दायकौ ।
अरोमशौ तु सुखिनौ श्रेष्ठौ करिकरप्रभो ॥५६॥

जिसकीभुजाकेऊपर बहुते रोमहों अल्प और छोटी भुजाहोतो दारिद्र्य दुःखऔर क्लेश दायक उस भुजाका लक्षण है और हस्तीकेशुंड के सदृश लंबी अल्प और थोडेरोमावली भुजासे सुखीहोनें के लक्षण प्रतीतहोतेहैं।श्रेष्ठभुजावहहैजिसभुजामें

थोडेरोमहो, थोडा मांस प्रतीतहो, लंबीहोवहीश्रेष्ठ और शुभफलको देनेंवाली है ॥५६॥

॥ इति भुजालक्षणम् ॥

॥ अथ जंघालक्षण प्रारंभ ॥

अल्परोमयुता श्रेष्ठा जंघा हस्तिकरोपमा।
रोमैकैकं कूपकेस्यात् नृपाणाँ तु महात्मनाम् ॥ ५७ ॥

जिसके जंघाके ऊपर अल्प और थोडा रोम होगा सो जंघा श्रेष्ठ सुख व भोगदायक है। यदि हस्तीके शुंडके समान ऊपर मोटीहो केनीचेसे पतली हो तो वही श्रेष्ठ सुख को देने वाली होती है। जंघाकेऊपरमें एक एक रोमके छिद्र में रोम हो तो बडा राजा महाराजा हो और महा सुख ऐश्वर्य्य भोग करनेंका लक्षण है। अथवा जंघाके रोम के छिद्र स्थानोंमेंदो दो रोम प्रतीत होंतो बडा पंडित, ज्ञानी शास्त्रज्ञ और बुद्धिमानहोनेकालक्षण जंघामेंदारोमकेहोनेंसे विदित होता है। दोदोरोमबराबर सारी जंघामेंहोनेंसेसम्पूर्णवेदवेदान्तका पढनेवाला वह

आणीसूत्रभाष्योपनिषदादितत्त्वमें अति निपुण,अ र्थकाज्ञाता,महापुरुषऔर ब्रह्मज्ञानी होनेका चिन्ह है ॥ ५७ ॥

रोमत्रयं दरिद्राणां रोगो निर्मांसजानुकः ॥
महा दारिद्र्य दुःख भुंक्ते रोमचतुर्थकम् ॥ ५८ ॥

जिसके जंघाके ऊपररोमत्रय हों तीनतीन रोम एकत्र मिले हुए हों तो वह जंघा दरिद्र दुःखरोगदायक है। यदि मांस जंघेमेंथोड़ा प्रतीत हो दुःखीहोने का चिन्ह है। यदिचाररोम एकत्र होतोबडीदरिद्रता काभोग करनेवालाप्राणीहोता है।चारचाररोमहोनें सेंदुःख ही करेगा इसमें सन्देह न करना ॥५८॥

॥ इति जंघारोमलक्षणम् ॥

॥ अथ चरणलक्षण प्रारम्भ ॥

निगूढ़ गुल्फौ पतितौ पद्मकांतितलौ शुभौ।
अस्वेदितौ मृदुतलो मत्स्या कनक सकितौ ॥ ५९ ॥

जिस प्राणी के चरण तले पद तले प्रतीत हो गूढे गुल्फ एंडी पाणि छोटा हो, कमल के समान सुन्दर प्रस्वेद पसेव चरणों में न हो, बडा कोमल

हो तोफल श्रेष्ठ देता है। जिसके चरण तले मछली के चिन्ह हों तो वह बड़ा राज्य भोगी हो। यदि मकरग्राहके चिन्ह हों तो बड़ा प्रतापी सुखी होके नाना प्रकारके वाहनपर चलनेका चिन्ह है। वह प्राणी श्रेष्ठ सुख पावेगा ॥ ५९ ॥

वज्राब्जहलचिन्हानि स्युर्पदाचरणशुभाःपशास्थितौ।
राजपत्नी तु सा ज्ञेया राजभोगे प्रदायकौ ॥ ६० ॥

जिसके चरण तले वज्रके चिन्ह हों या कमल का चिन्ह हो या हल लांगलका चिन्ह हो तो पुरुष राजा हो तो दासी भी रानी होकर राजसुख भोग करेगी ॥ ६० ॥

जंघे वा रोमरहिते सुवृत्तेपाशिरे.शुभे।
अत्युल्वणं सन्धि देशे समं जानुद्वयं शुभम् ॥ ६१ ॥

जिस स्त्रीके जांघके ऊपर रोमबाल न हों तो उसकी जंघा श्रेष्ठ है। उसके जंघेमेंनाड़ी न प्रतीत हो तो श्रेष्ठ दोनों जंघाके संधि विमल स्थान में बहुत नाड़ी न हो तो वह श्रेष्ठ है और सामान्य

बराबर दोनों जंघा होने से बडा सन्तानादिक सुखदायी जंघा होती है ॥ ६१ ॥

उरू ४.रिकराकरौ नीरोमौ च समौ शुभौ ।
रोमजंघाचनारीणां महादुखप्रदायकौ ॥ ६२ ॥

जिस स्त्री का जंघा हस्तीके शुन्डके समान हो तो वह श्रेष्ठ है। जिस स्त्रीके जंघेके ऊपर रोम न. हों तो वह बडा श्रेष्ठ फल धन, धान्य पुत्र कलत्र संयुक्त सुखदायक है अथवा स्त्रीकी जंघाके ऊपर रोम बहुत हों तो बडा दुःख क्लेश को देने वाला फल प्रतीत होता है ॥ ६२ ॥

॥ अथ गुह्य लक्षणम् ॥

अश्वत्थपत्रसदृशं विपुल गुदमुत्तमम् ।
पद्म कोशभिःश्रेष्ट गुह्यांचाहुमुनीश्वरः ॥ ६३ ॥

जिसका गुप्तस्थान गुदामार्ग अश्वत्थ पीपल के पत्र समान देखनेसे प्रतीत हो व कमल पुष्पके संपुटके सदृश प्रतीत हो तो स्त्री पुरुष दोनों का गुप्तमार्ग शुभ सूचक प्रतीत होता है। यदि इनदोनों चिन्हों से विपरीत गुप्त मार्ग हो तो उत्तम फलको

न देकर सदा क्लेश देता है ॥ ६३ ॥

सर्वाङ्गचिन्ह श्रोणि ललाटं उरुकं शुभम्।
गूढोमणिश्चशुभदोनितं वश्चमुरूशुभा ॥ ६४ ॥

जिस स्त्रीका जंघा औरललाट येदिकूर्म्मकच्छप की मृगुके समान होतो बडा श्रेष्ठ फल देयहै और कंठकेनीचे दोनोंतरफ मांस ऊंचा हो तो श्रेष्ठफल देता है और स्त्रियोंकू स्तन दोनोंमोटे उच्च होनेसे पुत्रादि सम्पूर्ण सुखको देनेवाला है। यदि स्त्रीके बहुत छोटे स्तन हों वा नीचे से दबा हो स्तनकै ऊपरमेंरोमकश होंतोस्त्रीको संतानादिकका सुख न होने का लक्षण प्रतीत होता है ॥ ६४ ॥

॥ अथ नाभिलक्षण प्रारम्भः ॥

विस्तीर्णमांसापचिता गंभीरा विपुला शुभा।
नाभिः प्रदक्षिणावर्तीयध्यं त्रिवलिशोभनम् ॥ ६५ ॥

स्त्रियोंके नाभिके ऊपर चारो तरफमें उच्च मांसहो, नाभीकेऊपर त्रिवली, पेटबडा हो नाभि, बडा गंभीर और गुप्त हो तो बड़ी श्रेष्ठ सुखसंपति होनाभी यदि दक्षिण दहिना वर्त घूमके प्रतीतहो,

नाभी के भीतर त्रिवली हो तो वडा सुख ऐश्वर्य हो सो पुत्रादिकोंके साथ वडा श्रेष्ठ सुख भोग होनेका चिन्ह है ॥ ६५ ॥

अलोमशौ सुस्तनौ च घनौ च विषमौ शुभौ ।
मृदुग्रीवा कंबुसमा अरोमा रसिके शुभे ॥ ६६ ॥

जिस प्राणीके स्तनोंमें रोम ने हो और ऊंचा, वडा समान हो, जड मिली हो, पीन मोटा होतो श्रेष्ठ स्तनहो । कंठे कोमल हो, शंख समान कंठ का उत्तम फल होता है । जिसके उरमें छातीसे ऊपर रोम न हो तो श्रेष्ठ फल दायक वडे सुख भोग का करने वाला लक्षण है ॥ ६६ ॥

॥ अथ गुह्य लक्षणम ॥

आरक्ता वधगौ श्रेष्ठौ मांसलवर्तुल सुख्यम् ।
कुन्दपुष्पसमा दन्ता भाषितं कोकिलासमः ॥ ६७ ॥

प्राणीके मुखमेंनीचेके ओठऊपरके द्वयसमाने आरक्त लाल वर्ण होनेसे श्रेष्ठ फल है ओष्ठ के ऊपर मास विशेष मोटा दल होकेवर्तुलाकर गोल होनेस श्रेष्ठ फलको देता है और कुन्द मुकुन्द

पुष्पके समान दंत सुन्दर श्वेत वर्ण प्रतीत होनेसे बडा श्रेष्ठ नाना प्रकार भोग करेगा। दंत श्रेष्ठसुन्दर होनेसे भोजनमें बडा सुखदायक है और जिसके बोलनेमें श्रेष्ठ वचन कोकिलाके स्वर के समान शब्द मुखमें होनेसे उत्तम सुख प्राप्त होता है॥ ६७॥

दक्षिणयाशुकमशटहंसशब्द सुखावहम्।
नासासमा समपुटास्त्रीणां तुच्छिरा शुभः॥ ६८॥

जिसका मुख दक्षिणावर्त हो, थोड़ा प्रेम युक्त कोमल हंसके शब्दके समान मुखके खोलने से श्रेष्ठ मुख संभोगके दायकब है शुख शब्दसे प्रतीत होता है। उच्च नासिका मध्य लाल वर्ण नासिका का छिद्र होनेसे उत्तम फल देता है। बडी नासिका श्रेष्ठ फल देनेवाली है सन्देह नहीं है॥ ६८॥

नीलोत्पलनिभं चक्षुर्नासामग्नोभलवकः।
नपृथुवालेन्दु निभौ भ्र वौ चाथ ललाटके॥ ६९॥

जिसके दोनों नेत्र नीलश्याम कमलके समान हों, दोनो कर्णके समानमें बहुत लंबे न हों तो

बड़ा नेत्रोंको श्रेष्ठ फल है किञ्चित लाल वर्ण नयनके मध्य होनेसे उत्तम फल देता है और बाल चन्द्रमा जानो द्वितीयाके समान भृकुटी बड़ी मोटी न हो, किञ्चित धनुषके समान भृकुटी ललाटके ऊपर सुन्दर प्रतीत होनेसे बड़ा श्रेष्ठ फलका लक्षण है ६९

शुभमर्द्धेन्दुसंस्थाने मृत्युगः स्यादलोमशः ।
अभामलंकणयोगं साम मृदुसमाहितं ॥ ७० ॥

जिसके दोनों कर्ण बाल द्वितीयाके चन्द्रमाके समान हों बड़े उच्च हों रोम न हों मैल श्यामता न हो मृदु अर्थात् कोमल हो तो ये चिन्ह बड़े श्रेष्ठ फल को देनेवाले होते हैं ॥ ५७ ॥

स्निग्धा नीलाश्च मृदुलो मूर्द्धजाऽञ्चितैस्तगः ।
स्त्रीणांशिरसमं श्रेष्ठं पादेपाणितले तथा ॥ ७१ ॥

जिस प्राणी के केश स्निग्ध नाम बड़े सुन्दर कोमल चिकने हों, नील श्याम वर्णके समान हों किंचित थोड़ा टेढ़ा कुटिल ऊपरमें केश हों तो बड़ा श्रेष्ठ फलदे । विशेष तो स्त्रियोंका शिर बराबर होना

शुभहै दोनों चरण दोनोंहस्तसमान होनेसे स्त्रियों को उत्तम फल होता है ॥ ७१ ॥

॥ अथ हस्त पाद नख चिन्ह दर्शनं ॥

वाजिकुंजर श्रीवृक्ष युग्येषु यव तोमरैः ।
ध्वजाचामरमाल भि शैलकुण्डलयादिभिः ॥ ७२ ॥

जिस प्राणी के हस्तमध्य व चरणमध्य स्त्रीके पुरुषके दाहिनेमें यह चिन्हकी रेखाहोतोश्रेष्ठफल है।घोडेके चिन्हवृक्षके चिन्ह यज्ञ कुण्ड केसमान यज्ञस्तंभके चिन्ह,यवके चिन्हैतोमरकेचिन्ह,ध्वजा केचिन्है,चामरके चिन्ह, पर्वत के चिन्ह कुण्डलके चिन्हयज्ञदेवीके चिन्ह,मालाके चिन्हे,यदि सम्पूर्ण लक्षण होतोश्रीलक्ष्मी नारयणकेलक्षण हों । बडे चक्रवर्ती राजा के हस्त पादमें ये चिन्ह होते हैं, यदि एक वा दो भी प्रतीत हों तो बडाश्रेष्ट फल देनें वाला चिन्ह है ॥७२॥

शंखातपत्रपद्मैश्च मत्स्यस्वस्तिकसदशाः
लक्षणै कुशौद्यैश्च स्त्रिय स्युःराजवल्लभा ॥७३॥

जिसके हस्त चरणमें शंख, छत्र, कमलपुष्प

मत्स्य मछली पताका उत्तम रथ अंकुश इतनें लक्षणहोंतो पुरुष काराजा औरस्त्रीरानीहो वामहस्तं चरणस्त्रीका देखना, दाहना हस्त चरणपुरुष का देखना । इन्हीं सब चिन्होंमें संसारके सुखका लक्षण ब्रह्माजीने प्राणियोंके हस्त चरणोंमे लिख दिया है सो सत्य जानना ॥ ७३ ॥

निगूढ़मणिवंधा च पदमगार्भौपमौ करौ ॥
नस्वल्प नोन्नत स्त्रीणां भवते करतलं शुभम् ॥७४॥

जिसके हस्ती चेरवा मोटे हो मणिबन्ध नाम पहुंचा मोटा हो । मांस से भरा होथकमलपुष्पके समान अति कोमल दलकेभीतर में जैसाप्रतीतेहो, वडा ऊंचा न हो अत्यन्त नीचा हो समान हस्त होनें से स्त्रियोंको वडा भोग देनेवाला यह चिन्ह प्रतीत होता है ॥ ७४ ॥

रेखान्विता तु विधवा कुर्य्यांत्सं भोगिना स्त्रियोः ।
रेखायुमा पंतलग्ना सुखीभोगप्रदा शुभः ॥ ७५ ॥

जिसके हस्तकी रेखा दो मिलके संयुक्त प्रतीत हो यदि अंगुष्ठ तर्जनी के मध्य स्थानसे जोदो रेखा बड़ी पुष्ट होके चली हो सो रेखा यदि जड़ तलक

मिल गई हो तो स्त्रीका बडा भाग्य होता है।वह विधवा नहीं होगीअपनेपतीके संगमें नानाप्रकार का सुख भोग करेगी। दो रेखा एकत्रित मिलने से सदा उस प्राणीको सुख भोग होता है ॥७५॥

रेखा वा मणिवंधात्था गता मध्यगुली करे।
गता पाणितले यावत् ऊर्ध्वं पाणितलँ स्थिता ॥७६॥

जिस प्राणीके मणिबंध नाम पहुंचके जडसे आरम्भ ऊंचा ऊपरमें उठके मध्यमा अंगुली के मूल जड तलेमिलके जो प्रतीत होती है उसी रेखा कोसामुद्रिकमें ऊर्ध्वरेखाकहतेहैं। सोई ऊर्ध्वरेखा हलमें हो अथवा चर्णमें हो तो उस रेखाके होने से नाना प्रकारकें सुख भोग होनें का चिन्ह है ॥७६॥

स्त्रीणां पुंसां तथा सम्यक राज्याय च सुखाय च।
पुत्रपौत्रादिसंपन्ना चोर्द्ध रेखा सुखप्रदा ॥७७॥

हस्तमें ऊर्ध्व रेखा हो तो सम्पूर्ण फल है।यदि चरण मे हो तो सम्पूर्ण राज्यसुख भोग विभवपुत्र पौत्रादिकसे संयुक्त होके इस लोकमें बडा सुखी होकेरहेगा।उर्ध्व रेखा युक्त प्राणीको अवश्यसुखी

होना चाहिये ॥७७॥

कनिष्ठामूलरेखा तु कुर्य्याच्चैव शतयुर्श ।
अनामिकामध्यमाभ्यामंतरालग्नतामसी ॥७८॥

जिस प्राणोंके कनिष्ठ छोटी अंगुलीके मूलजड़ तले एक कोई छोटी रेखाप्रतीत हो तो उसकी एक १००वर्षकीआयुहोतीहै।यदिअनामिकासेमध्यमा अंगुली के मध्यम स्थानमें एक रेखा कोई ऊपरसे चलकेनीचेकीओरगिरी होतोवहरेखास्त्रीकेहस्त रहनेसे पतिव्रताऔरभाग्यवानहोनेकालक्षण है । यदिपुरुषको हो तो वहधर्मशील,सत्यवादी,सुखी, धनीऔरलोकम प्रसिद्ध होक नाना प्रकारका सुख भोगे ॥७८॥

ऊना ऊनायुपेकुर्या स्वाचांगुष्ठमूलगा ।
वृहत्थः पुत्रस्तस्यात्ममदापरिकीर्तिताः ॥७९॥

यदिअंगुष्ठकेनीचेकीरेखा छोटी औरछिन्नभिन्न प्रतीत होतोअल्पायु प्रतीतहोती है।यदिअंगुष्ठके मूल तले पूर्ण रेखा हो तो पूर्णायु प्रतीत होती है । अंगुष्ठकेमलके नीचेमेंजितनीरेखाहैंसोसबलम्बी

लम्बीमोटी२पुत्र होने कीरेखाहैंग्रौरछोटी२पतली रेखासेकन्या होनेका चिन्ह देखा जाता है। इसमें सन्देह नहीं ॥७९॥

अल्पायुपे लघुछिन्ना दीर्घा छिन्ना महायुपे।
शुभं तु लक्षणंस्त्रीणां प्रोक्तन्तुशुभमन्यथा ॥८०॥

अंगुष्ठकेनीचेकारेखासबमेंदेखना।थोड़ीग्रायु बालकके होनेमें छोटी रेखास छिन्न भिन्न मालूम होगी। यदि बडे रेखा होके छिन्न हो तो बडी ग्रायु काचिन्ह प्रतीत होता है।ये सब लक्षण स्त्रियोंके हस्तमैं होनेसे श्रेष्ठ फल है। यदि ये चिन्ह न हों तो जो फल कहा गया है सो न होगा। वृथा चिन्हके होने से ग्रौरप्रकारका फल होगा ॥८०॥

॥ इति शुभलक्षणम् ॥

अथ अशुभलक्षणम्।

कनिष्ठानामिकाया च यस्य न स्पृशतेमहीम्
अंगुष्ठ वागजातीत्य तर्जनीकुलटाच सा ॥८१॥

जिस स्त्रीकी कनिष्ठा नाम चरणकी छोटीअं गुलीसैछोटीग्रंगुलीकेपासकी ग्रनामिकाग्रंगुलीये

दोनों यदिपृथवीपरचलनेसे ऊंची प्रतीतहों,वअंगु ष्ठबडीअंगुलीकेऊपरसेचढकेतर्जनीअंगुली हों तो वह स्त्रीकुलटा परपुरुषके संगमें भोगकरनेवाली और स्वैरिणी होगी ॥८१॥

ऊरूताभ्यांपिण्डिकाभ्यांजंघेचातिशिराचम ।
रोमशो चातिमांसे च कुम्भा कारन्तथोदरम् ॥८२॥

जिस नारीकी जांघमेंऊपरकीतरफ बडीमोटी प्रतीत हो,जांघमें नाडी शिरा प्रतीत हो, जांघमें बहुत रोम हों,जाघमे बहुतमांसप्रतीत हो,कुम्भ घडेके समान उदर पेट जिसका हो य लक्षणस्त्री को अशुभ फलकी देनेवाले हैं ॥८२॥

वामावर्तनाभिमल्पं दुःखितानां च गुह्यकम् ।
ग्रीवा ह्रस्व च योनिवादीर्घायाचकुलक्ष ये ॥८३॥

जिस नारीकी वामावर्तनाभीहो वामार्त गुह्य गुदा हो,नाभी छोटी हो छोटी ग्रीवा कन्धे हो योनि भाग बडा लंबा हो तो उसका वंश न चलने का चिन्ह है ८३॥

पृथूल्याप्रचंण्डाश्च स्त्रिः स्यूर्नात्र शशयः ।
केकरे ऽपिंगलेनेत्रे स्याचेतोलक्षणोसती ॥८३॥

जिसनारीकेबडेमोटे कपोलऔरलालगालहों सो बडीकलहा दुष्टवचनवाली होगी, जिसनारी केनेत्रहैरिद्रावर्णहों, मार्जारीबिल्लीकेनेत्रकेसमान नेत्र हों, यदि नीचा नेत्र हो, यदि चंचल नेत्र हो चपल अंगवाली हो तो वह नारी व्यभिचारिणी और दुष्ट वचन कहनेवालीहोती है ॥८४॥

सितेकूपेगंडयोश्वसा भ्रवंव्यभिचारिणी ।
प्रलंबिनीललाटेच देवरंहन्ति चांगना ॥८५॥

जिस नारीके कपोल गालके ऊपरश्यामताकी भाई प्रतीत हो तोवह व्यभिचारिणी और परपुरुष के संगमें भोग करनेवालीहोती है। जिस नारीका बडा लम्बा ललाटहोतोवहे अपने स्त्रामीके छोटे भ्रातको मारने वाली होती है ॥८५॥

उदरेश्वशुरंहन्तिपतिहन्त्रास्यचोर्ध्वयोः ।
यातुरोमोत्तरोष्ठीस्यान्नशुभिचोर्द्धरेवहि ॥ ८६ ॥

जिसनारीकेस्तनमें श्यामता हो बडा उदर हो तो वह अपने श्वसुरको मारनेवालीहो। यदि ओठ ऊपरकेचढे होंतो पतिके मारनेवालीहो जिसनारी

कै ऊपरके ओठपर मूछके बारऐसे रोमहोंतोअशुभ है वह स्त्री माता, पिता, श्वशुर और तीनोवंशको दुख देनेवाली होगी ॥८६॥

उतनौ सरोमांवशुभौ कलौ च विषमौ तथा ।
करालविषमा दंताः क्लेशाय च भयाय च ॥८७॥

जिसनारीके स्तनकेऊपररोमहोंतोबड़ाअशुभ है।जिस नारीकेदोनों कर्ण विषमबडेछोटेहोंअथवा दोनों दन्त बडे हों समान बराबरन होतो वह स्त्री दुखदायक होती है ॥८७॥

चौर्याय कुष्ठमांसंच दीर्घाभर्तुश्चनाशने ।
क्रव्यादिरूपैर्हस्तैश्चवृककाकोदिन्निभैः ॥ ८८ ॥

जिसनारीकेदन्तकेनीचेसेमांस उठाहुआऊंाच प्रतीत हो तो वह चोरकर्ममें चतुर होगी । यदिदन्त बडे बडे किवाड़ देहली ऐसे लम्बे होंतो वह अपने स्वामीको मृत्यु देगी ।यहचिन्ह पतिराहत होनेका प्रतीत होता है । काकके समान व वृकके समानवा गृध्के समानहस्तप्रतीतहोंतो पतिविहीनाहोनेका लक्षण है ॥ ८८ ॥

शिराढ्यैर्विषमैः शुष्कैर्वित्तहीना भवन्ति हि।
दुःखिनापापनिरताउर्ध्व नाड़ी च डाकिनी ॥ ८९ ॥

जिस नारीके हस्तपादादिक अंगप्रत्यंगमें बहुत बडी और मोटी २ नाडी प्रतीत हों तो वह धनहीन दरिद्री, पापिनी, कलहा औरव्याभिचारिणीहो८९

समुन्नतोत्तरोष्ठा या कलही रूक्षकेशिनी।
स्त्रीषु रौद्राविरूपाक्षा रुक्षाकारेषु गस्तनः ॥ ९० ॥

जिसनारीके ऊपरके ओठका दल बडा मोटा औरऊंचाहो, केशमें रुक्ष रूखर भ्रमर बाल प्रतीत हों तो वह स्त्री कलहकारी होती है। कलहमें प्रीति करती। नेत्रवाके भयंकर मालूम हों तो क्लेशिनी दोनों लक्षणाहैं येसम्पूर्ण अशुभलक्षणनारीके अंग के निरूपण किये गये हैं ॥९०

॥ इति गरुडोक्तं स्त्री लक्षण सम्पूर्णम् ॥

कनिष्ठासहिमाश्रित्यमध्यमाया पोगत।
षष्टि वर्षा युतं कुर्यादायुरेखा तु मानवम् ॥ ९१ ॥

जिसस्त्रीकेहस्तमें कनिष्ठिकाअंगुलीसेआरंभ होके मध्यमा अंगुलीके मूलपर्यंत एक बडी रेखा चली गईहो तोउसकी ६० वर्षकी आयु जानना

चाहिये ॥ ६१ ॥

यस्यास्ते कुञ्चिता केशाःमुखं च परिमंण्डलम्
नाभिश्च दक्षिणावर्त्ता सा कन्या कुलवर्द्धिनी ॥ ६२ ॥

जिसनारीके मस्तकके केश किंचित टेढे होके मुखके ऊपरसे घूमके फैल जांय तो उत्तम है। यदि दक्षिणावर्तनाभीमंडलहोतो कन्याअपनेकुलमात्र बढ़ानेवाली और सुखसे रहनेवाली होगी ॥ ६२ ॥

या च कांचनवर्णाभा रक्तहस्त करोरुहा।
सहस्त्रेष्वपिनारीणांभवेत्साहिपतिव्रता ॥ ६३ ॥

जिसनारीकेशरीर रंग कांचन सुवर्णके समान हो औरहस्तचरणकेमध्यमेंरक्त वर्णलाल कमलके समानअरुण वर्ण भासमान होतो वह स्त्री हजारों स्त्रियोंकेमध्यमेंबड़ीसुखीऔरधर्मशील पुत्रपौत्रादिकोंसेसम्पन्नहोकेअपने पतिकीसेवासे नानाप्रकारकासुखभोगकरेगी ॥ ६३ ॥

रक्तकेशा च या कन्या मंडलाक्षी तु या भवेत्।
भर्तारौ मृयते तस्या नियतं दुःखभागिनो ॥ ९४ ॥

जिसनारीकेआरक्त वर्णके केश और रोम हो, बिल्ली केसमान गोल नेत्रवाली स्त्रीका स्वामी

अवश्यमरे वहविधवाहोकेजन्मसेमरणपर्यंतनाना प्रकारका दुख भोग करेगी ॥ ९३ ॥

पूर्णचन्द्रमुखी कन्या बालसूर्य समप्रभा।
विशालनेत्रा विम्बोष्ठी सा कन्या लभते सुखम् ॥ ९५ ॥

जिसनारीका मुख सुन्दर पूनोंकेचन्द्रकेसमाने गोल हो, प्रातःकालके सूर्यके समानसुन्दर शरीर हो बडे सुन्दर विशाल और लम्बे नेत्र हों, दोनों ओठरक्तवर्णविम्बकेसमानलालहोंतोवहबडाभोग करने वाली रानी होके नानाप्रकारकासुखकरेगी

रेखाभिर्बहुभिः क्लेशं स्वल्पाभिर्द्धनहीनता ॥
रक्ताभिः सुखमाप्नोति कृष्णाभिः क्लेशतांव्रजेत् ॥ ९६ ॥

जिस प्राणीकेहस्तकी रेखाछोटी २ होंतोउसके दुःखी होनेका चिन्ह है। यदि बहुत कम हो तोधन हीनव दरिद्री होनेका चिन्ह है। हस्तकीरेखा अरुण रक्तवर्ण होनेसे प्राणी सुखी होता है और हस्तकी रेखामें श्यामता काला वर्ण होनेंमे दुःख प्राप्तहोने काचिन्ह प्रतीत होता है ॥ ९६ ॥

अंकुशं कुण्डलं चक्रं यस्यः पाणितले भवेत्।
पुत्रं प्रसूयते नारी नरेन्द्रं लभते पतिम् ॥ ९७ ॥

जिस नारीके हस्तमें अंकुश, कुन्डल अथवा चक्रका चिन्है होतोवहस्त्रीबड़ीभाग्यवान श्रेष्ठपुत्र उत्पन्नकरनेवालीहोऔरराजासेउनकाविवाह हो

यस्यांस्तु रोमशौ पार्श्वौ रोमकुक्षौ पयोधरौ ।
उन्नतो चाधरोष्ठो च क्षिप्र माप्यते पतिम् ॥ ९८ ॥

जिसनारीकेदोनों बगलमेंपेटके पासपसुलीमें बहुतसे रोम हो, यदि स्तन पयोधरके ऊपर रोम हों यदि नीचेके ओठका दल बडा मोटा प्रतीत हो तो विधवा होनेका चिन्ह है इसमें संदेह नहीं ॥ ९८ ॥

यस्य पाणितले रेखा प्रकारं दृश्यते यदि ।
अपिदासकुले जाता राज्ञत्वमुपगच्छति ॥ ९९ ॥

जिस नारीके हस्तमें प्रकार नामकछोटे महल काचिन्ह हो तोचाहे उसकाजन्म दासकुलमें भीहो परन्तुउसकाचिन्है राज्यसुखभोगकरनेकाहै ॥ ९९ ॥

उर्ध्वतः कपिला यस्याः रोमराज्ञी निरंतरम् ।
अपिराजकुलेजाता दासित्वमुप गच्छति ॥ १०० ॥

जिस नारीके केशके ऊपर रोमके अग्रभागमें कपिलावर्ण, हरिद्रा वर्णप्रतीतहों संपूर्णरोमके अग्र भागमें पीतेवर्ण होतो वहस्त्री चाहे राजकुलमें भी

जन्मलेपरंतु उसकालत्तणदासी होनेकाहै॥१००॥

यस्यानामिकांगुष्ठो पृथिव्यां नैव तिष्ठति।
पति मारयते क्षिप्रं स्वतंत्रेनैव वर्त्तते॥१०१॥

जिस नारीके चरणकीअनामिका अंगुलीऔर अंगुष्ठे दोनों पृथ्वीसे ऊंचे होके प्रतीत हां तो वह पति को मार विधवा होके स्वतंत्र व्यभिचारिणी बनकर लोकमें दुःख पावेगी अथवा वैश्या होके मरे येहे निश्चय होता है॥ १०१॥

यस्यागमन मात्रेण भूमिकम्पोपजायते।
पति मारयते शीघ्रं स्वेच्छाचारेण वर्त्तते॥१०२॥

जिस नारीके चलनेसे पृथ्वीमेंस बड़ा धम धम शब्द प्रतीत हो, पृथ्वी कम्पित मालूम हो तो वह स्त्री अपने पतिकोमार विधवा होके व्यभिचारिणी बनकर परपुरुषके संगमें भोग करनेवाली स्वैरिणी स्त्री होगी॥ १०२॥

चक्षुस्नेहेन सौभाग्यं दन्तस्नेहेन भोजनम्।
त्वचस्नेहेन पर्य्यंकं पदस्नेहेन वाहनम्॥१०३॥

जिसप्राणीके नेत्रकी शोभा अच्छी हो तो वह बड़ा भाग्यवान होगा, जिसके दन्तमें सुन्दरता हो

उसको वड़ा दिव्य भोजन षट्रस अन्न प्राप्त होगा, शरीर का सर्वांगत्वचा चर्म बड़ा सुन्दर होनेसे पलंगेका सुख होगा, पद कोमल प्रतीत होनेसे नाना प्रकारके वाहनरथ, पालकी, घोड़े हस्ती आदिकी सवारी प्राप्त होनेके लक्षण हैं॥ १०३॥

स्निग्धांन्नतौ ताम्रनखौ नार्य्याश्च चरणौ शुभौ।
मत्स्यांकुशाब्जचिन्हौ च चक्रं लांगल लक्षितौ॥ १०४॥

जिस नारीके दोनोंपैर कोमल और बहुतऊंचे हों, तांबेकेसमान सुवर्ण नख होंतोबड़ा श्रेष्ठ फल है। यदि चरणमें मत्स्य मछलीके समान चिन्हहो अंकुश का चिन्ह हो, कमलका चिन्ह हो, चक्रका चिन्ह हो,लांगल हलका चिन्ह हो, यदिइतने चिन्ह हों वा एकही चिंन्ह हो तो भी वह स्त्री बड़ी भाग्य वाली होगी और लोकमें सुखी होके संपूर्ण भोग करती हुई आनन्दसे रहेगी॥ १०४॥

अस्वेदिता मृदु तलौ प्रशस्तौ चरणौ स्त्रियः।
शुभे जंघे विशेषेण उरू हस्तिकरोपमौ॥ १०५॥

जिस नारीके दोनों चरणमें धर्मस्वेद पसीना

नहो, चरणा बड़े कोमल प्रतीतहोंतो वहै उत्तमफल को प्राप्त होगी, सुन्दर जंघा रोम रहित हस्ती के सुंडके सदृश हो तो वहबड़े श्रेष्ठ फलको प्राप्तहोगी सुन्दरतथाबहुतसुखीहोकरसम्पूर्णसुखकोभोगेगी

नाभिः प्रशस्ता गम्भीरा दक्षिणावर्त्तिका शुभा।
अरोमत्रिवली नार्या हृत्स्तनौ रोमवर्जितौ ॥ १०६ ॥

जिस नारीकी नाभी श्रेष्ठ, उत्तम गम्भीर और नीची होदहिनेवर्त घूमते हुए नाभीकेशिरा प्रतीत हों, रोम केशके रहित होके त्रिवली तीनपेटीनाभी के ऊपरमें होनेसेश्रेष्ठफल होताहै। हृदय छातीसे स्तन पयोधरके ऊपरमें रोमनरहनेसे श्रेष्ठफलका लक्षणहोता है। येचिन्ह होनेसे स्त्रीको बड़ा श्रेष्ठ फल प्रतीत होता है ॥ १०६ ॥

श्लिष्टांगुली ताम्रनखा पादांगुष्ठो शिराचितौ।
कूर्मोन्नतौ गुढ़गुल्फौच या स्त्री नृपतेस्मृतौ ॥ १०७ ॥

जिसप्राणीके चरणकी सम्पूर्ण अंगुली मिली हों छिद्र न प्रतीत हो और चरणके नख ताम्र वर्ण हों चरणके ऊपर ऊंचा प्रतीत होकर सुन्दर सुन्दर नाडीप्रतीतहोंकूर्मकुछुवाकीपृष्ठ केसमानचरणके

ऊपर मोटा दल प्रतीत हो चरणकी एडी ऊंची हो अथवा चरणकी एडीके ऊपरदोनों तरफगुल्फबेढ़ ऊंचे प्रतीत होंतो इन चिन्होंके होनेस राज ऐश्वर्य मव विभव को प्राप्त करनेवाला चरण चिन्ह प्रतीत होता है॥१०७॥

सूर्पाकारौ वरुक्षा च वक्रौ च विरलांगुली।
कषायतद्दृशौ पादौ दरिद्राणां प्रकीर्तितौ॥१०८॥

जिसप्राणीके चरण सूर्प के समान हो, देखनेमें विरुद्ध रूखर मालूमहो. जिसके तिरछेकिंचितघूमे चरण हों, विरले पृथक्२ उंगलीरहनेसे कषायगेरू मट्टीके समान चरण तले प्रतीत होनेसेइतने चिन्ह होनेमेंदरिद्रीऔरदु:खीजनोंके चरणमें अशुभसूचकप्रतीत होता है ॥१०८॥

दक्षिणावर्तचलित मूत्रे तु नृपतिः स्मृतः।
स्थूलग्रन्थियुते लिङ्ग रक्त पुत्रादिसंयुतः॥१०९॥

जिसप्राणीके पेशाब करनेके समयमेंमूत्र एक बराबर धारहोकरदाहिनेतरफमेंजाकरपडेतोदक्षिणावर्तमूत्राके पड़नेसे वह राजा होके राजभोगका कर्ताहोगा।यदिलिंगकेऊपरमें गिरहहो, ग्रंथिबन्ध

न टूटानेहो, लिंगकेऊपरमेंरक्त वर्ण प्रतीतहोतोपुत्र पौत्रादिक सम्पन्न हो नेका चिंह है ॥२०९॥

पुष्पगंधियुतेशुक्रे भवेद्राजासुधार्मिकः।
मधुगन्धयुतेवीर्य्ये धनवान् सुखकृन्नरः।

जिसप्राणीकेवीर्य्यमें उत्तमपुष्पकेसमानसुगंध होतो राजा होनेका चिन्ह है। जिसकेवीर्यमें शहद अर्थात मधुकेसमान गन्धहोतो वहधनीमहासुखी और धनपात्र होकरलोकमेंविख्यातसुयशकरेगा

पुत्राःशुक्रे पुष्पगंधे तत्र शुक्रे च कन्यकाः।
महाभोगी मांसगन्धे द्वास्यान्मधुगन्धिनी ॥१ १॥

जिस प्राणीकेवीर्य्यमेंउत्तम पुष्पकेसमानसुगन्धिप्रतीतहोतो वहपुत्र पौत्रादिक उत्पन्नकरताहै यदिउत्तम पुष्पकी सुगंधि न हो और मदगंध हो तोकन्याकीउत्पत्तिहोगी।यदिवीर्य्यमेंमांसकी गंध हो तो बडा सुखी भोगी होगा। वीर्य्यमें मदिराके समानगन्धहोतोभीबडाभोगीभाग्यवानऔरलोक में प्रसिद्ध होकर सुखी रहेगा ॥१११

क्षारगंधदरिद्रीस्यात् दीर्घायुः शीघ्रमैथुन।
समवक्षास्तुभोगाढ्यो निकम्पकवक्षाधनान्वितः ॥११२॥

जिसस प्राणीके वीर्य्य खारगन्ध हो तो दरिद्री

होनेका चिन्ह है। जिसके मैथुन समयमें भोग करते हुए शीघ्रवीर्य्यपात होतो दीर्घ जीवी होनेका चिन्ह है। जिसकी छाती समान बराबर ऊंचीहोतोवहधनवान हो। जिसकी छातीमें नीची खालमतीतहोती निर्धन होनेका लक्षण प्रतीत होता है॥ ११२॥

इदं सामुद्रिकंशास्त्रं विष्णुनाथद्विभाषितम्।
श्रुत्वाधृत्वापठित्वा च शोकान्दहतिपंडितः॥ ११३॥

श्रीमहादेवजी श्रीपार्वतीजीसे कहते हैं कि हे गिरिराजनन्दिनी प्रिये! यह सामुद्रिक-शास्त्रतोश्री विष्णु भगवान्जीनेब्रह्मासेकहा है। इससामुद्रिक शास्त्रकोयदि कोईप्राणी श्रवणकरेगावा इसकेअर्थ को धारणकरेगाअथवा इसकोपढेपढावेगातोइस सामुद्रिकशास्त्रकेजाननेसेवहप्राणीबुद्धिमानवपंडित होकर सम्पूर्ण संसारके मध्य में नानाप्रकारकी चिन्ता को त्यागकरके सुखी होगा और सम्पूर्ण कामनाओं को पावेगा॥ ११३॥

इति श्रीसामुद्रे गौरीहर तंत्रसंवादे समस्त स्त्री पुरुष लक्षण शुभाशुभ कथनं सम्पूर्णम्।

महताब राय द्वारा—सरस्वती प्रेस; काशी में मुद्रित।